(जीवनी)

कल्पना सरोजः शून्य से शिखर तक का सफर

परिचय :- जिस काली रात के बाद जिस तरह सवेरा आता है, उसी तरह भारत की पहली महिला उद्यमी कल्पना सरोज का जीवन भी संघर्षों के बाद सफलता की एक कहानी है। ₹2 से शुरू कर उन्होंने 2000 करोड़ का विशाल साम्राज्य खड़ा किया।

प्रारंभिक जीवन : कल्पना सरोज का जन्म 1961 में महाराष्ट्र के अकोला जिला के एक छोटे गाँव रोपणखेड़ा में हुआ था। उनके पिता महादेव जी पुलिस हवलदार थे। उनके पिता चाहते थे कल्पना पढ़ाई करें क्योंकि कल्पना पढ़ाई में अच्छी थी लेकिन समाज के दबाव के कारण कल्पना 7वी तक ही पढ़ाई कर पायी और तभी उनका बाल विवाह 12 वर्ष की उम्र में करा दिया गया। उनके पहले पति उनसे उम्र में 10 वर्ष बड़े थे। कल्पना के ससुराल वाले उन्हें काफी यातनाएं देते और घरेलू हिंसा करते।

एक दिन कल्पना के पिता महादेव जी मिलने जाते हैं, तब कल्पना की हालत देखी नही जाती और उसी समय पिता कल्पना को अपने घर लेकर आ जाते हैं, फिर समाज के तानों ने कल्पना को अंदर से खा रही थी। एक दिन कल्पना समाज से परेशान होकर आत्महत्या करने की प्रयास करती है, और जहर पी लेती है। लेकिन सही समय पर उनके चाचा जी अस्पताल लेकर जाते हैं। तब वह कल्पना पहले की तरह नही थी। इस नये जन्म में कल्पना पहले से ज्यादा मजबूत, आत्मविश्वासी और ऊर्जावान महसूस कर रही थी। तभी वह सोची अब इस जन्म कुछ कर के ही दिखाना है।

व्यावसायिक यात्रा और सफलता :- अस्पताल से आने के बाद कल्पना अपने चाचा जी के साथ मुम्बई जाती है। जहाँ एक कपड़े की फैक्ट्री में 2 रुपये प्रति दिन कमाना शुरू किया तब वह केवल 16 वर्ष की थी। धीरे-धीरे कल्पना की रुचि उद्योग में बढ़ने लगी तब कल्पना 50 हजार लोन लेकर एक सिलाई मशीन खरीदी और अपना बुटीक की शुरुआत की।

इस तरह से पैसे जमा हुए और वह मात्र 22 वर्ष की उम्र में अपनी लगन और मेहनत से पहली फैक्ट्री फर्नीचर की फैक्ट्री बनायी। इस तरह से धीरे-धीरे उनका उद्योग बढ़ने लगा और 2006 में 25 सालों से बंद पड़ी कमानी ट्यूब्स को फिर से शुरू किया। कंपनी के अध्यक्ष के रूप में कल्पना कंपनी को नई ऊंचाई दी और इस तरह से कल्पना आज कई कंपनियों की मालकिन हैं और उनकी कंपनी आज 2000 करोड़ की बन गई।

कल्पना को 2013 में उद्योग के क्षेत्र में विशेष योगदान करने के लिए पद्मश्री से नवाजा गया। आज कल्पना बेरोजगार लोगों के लिए कई NGO चलाती है, उनके कंपनी के नाम से मुम्बई में सड़कें भी बनी हैं, रामजी बाई कमानी और कुर्ला कमानी। एक समय पर उनके गांव जाने के लिए पक्की सड़कें नही थी। इस तरह से काफी सफलता पाने के बाद दूसरी शादी समीर सरोज से किया जो कि एक स्टील उद्योगपति थे।

निष्कर्ष :- इतने संघर्षों के बाद सफलता पाने वाली कल्पना लाखों महिलाओं के लिए सशक्तिकरण की मिसाल बनी।

डॉ. कल्पना सरोज की प्रासंगिकता आज के महिला विमर्श में एक ऐसे सशक्त स्तंभ के रूप में है, जो यह सिद्ध करती हैं कि सामाजिक और आर्थिक बेड़ियाँ कितनी भी मजबूत क्यों न हों, दृढ़ इच्छाशक्ति से उन्हें तोड़ा जा सकता है। एक दलित परिवार में जन्मी कल्पना जी का जीवन 'दोहरे दंश'—जातिगत भेदभाव और लैंगिक असमानता—के विरुद्ध संघर्ष की गाथा है। मात्र 12 वर्ष की आयु में बाल विवाह, ससुराल में अमानवीय प्रताड़ना और फिर समाज द्वारा परित्यक्ता के रूप में देखे जाने के बावजूद, उन्होंने आत्महत्या के विचार को त्यागकर स्वावलंबन का मार्ग चुना। उनकी सबसे बड़ी प्रासंगिकता 'आर्थिक स्वतंत्रता' के सिद्धांत में निहित है; उन्होंने सिलाई और छोटे व्यवसायों से शुरुआत कर 'कमानी ट्यूब्स' जैसी रुग्ण कंपनी को पुनर्जीवित किया और ₹2000 करोड़ का औद्योगिक साम्राज्य खड़ा किया। यह उन करोड़ों महिलाओं के लिए एक जीवंत उदाहरण है जो घरेलू हिंसा या सामाजिक रूढ़ियों के कारण स्वयं को असहाय मानती हैं। वे केवल एक सफल उद्यमी नही, बल्कि एक सामाजिक मार्गदर्शक भी हैं, जिन्होंने भारतीय महिला बैंक के माध्यम से स्त्री-शक्ति को बैंकिंग और मुख्यधारा की अर्थव्यवस्था से जोड़ा। उनका जीवन यह संदेश देता है कि पितृसत्तात्मक समाज में एक महिला की असली ताकत उसकी शिक्षा, उसका हुनर और उसकी वित्तीय आत्मनिर्भरता है। आज के युग में, जहाँ महिलाएं स्टार्टअप और कॉर्पोरेट जगत में अपनी पहचान बना रही हैं, कल्पना सरोज का संघर्ष और सफलता उन्हें एक 'ग्लोबल आइकन' बनाती है, जो यह सिखाती हैं कि शून्य से शिखर तक का सफर केवल हौसलों के दम पर तय किया जा सकता है।

SUMAN KUMAR
ENGLISH DEPARTMENT
2024-28
240182